

# आमंत्रण

इस जीवन को समझो ।  
आपको यह एक भेंट मिली है । इसको स्वीकार करो  
और अपने जीवन को सफल करो ।  
प्रेम रावत

देखिये  अंजन टी.वी. पर  
प्रेम रावत जी का संदेश

चैनल नं. 629

चैनल नं. 857

 airtel | digital TV

videocon 



लोकल केबल ऑपरेटर्स के द्वारा भी उपलब्ध

प्रतिदिन

सुबह 7:00 बजे व 8:30 बजे

दोपहर 12:30 बजे

शाम 4:30 बजे व 6:30 बजे

रविवार: सुबह 10:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे

## परिचय

विगत 50 वर्षों से भी अधिक समय से विश्व में लोगों के जीवन में शांति लाने के लिए श्री प्रेम रावत प्रयासरत हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें शांति के विषय पर चर्चा करने वाले एक अग्रणी वक्ता के रूप में पहचाना जाता है। उन्हें उनके कार्यों के लिए “लाइफ टाइम एचीवमेंट” अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। प्रत्येक मनुष्य के अंदर शांति पाने की प्रेरणा देने के लिए उन्हें कई देशों की सरकारों और संस्थाओं ने “शांति दूत” की उपाधि प्रदान की है।

श्री प्रेम रावत छोटे-छोटे अनौपचारिक कार्यक्रमों से लेकर वृहद् अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों, विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों, पार्लियामेन्ट्स, जेलों और कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपना संदेश सुना चुके हैं। वे हर एक व्यक्ति के अंदर स्थित शांति की चर्चा करते हैं। उनके इस संदेश ने दुनिया के हर वर्ग के लोगों को आकर्षित किया है।

## संदेश

आप प्लानिंग करते हैं एक हफ्ते की, एक महीने की, एक साल की। अजी छोड़िये। आप एक पल की प्लानिंग कीजिये। क्या आप पल के बारे में कभी सोचते हैं? पल आता है और चला जाता है। चिंता करते हैं आप कल की — कल क्या होगा या कल क्या हो गया? ये दो चिंताएं लगी रहती हैं। लेकिन सारा जीवन कहां है? हर एक पल में है।

याद रहे कि वो चीज जो मुझे जिन्दा रखती है, हर स्वांस के साथ मेरे अंदर आ रही है। हर स्वांस के साथ, वो चीज आ रही है, जा रही है और हर पल, हर क्षण वो मुझे छू रही है।

प्रेम रावत

श्री प्रेम रावत जी के द्वारा दिये गये शांति के संदेश के वीडियो कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं ।

**दिनांक :**

**समय :**

**कार्यक्रम स्थल :**

**स्थानीय संपर्क :**

*प्रेम रावत जी का संदेश सुनने के बाद एक श्रोता के विचार*

जिंदगी की भागदौड़, अफरातफरी और आपाधापी का मकसद होता है शांति पाना। लेकिन शांति एक मृगमरीचिका की तरह दूर भागती है। प्रेम रावत जी के संदेश को सुनकर यह अनुभव हुआ कि शांति तो हमारे भीतर ही है। जरूरत है अपने अंदर झांकने की।